ए आर देसाईः मार्क्सवाद तथा भारतीय राष्ट्रवाद

*डॉ. नरेन्द्र कुमार

प्रधान शब्द :— राष्ट्रवाद, राष्ट्रीय संस्कृति, बुर्जुआ वर्ग, ऐतिहासिक भौतिकवाद, द्वंदात्मक भौतिकवाद।

ए आर देसाई का पूरा नाम अक्षय रमण लाल देसाई था। उनका नाम भारत के प्रमुख समाजशास्त्रियों में लिया जाता है। उनका जन्म 26 अप्रैल 1915 को बड़ौदा, गुजरात के एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ। उन्होंने एमए, एलएलबी करने के पश्चात प्रोफेसर गोविन्द सदाशिव घुर्ये के निर्देशन में 1946 में पीएचडी की डिग्री हासिल की। 1947 में उनका विवाह नीरा देसाई के हुआ। घुर्ये जब बंबई विश्वविद्यालय में प्रोफेसर थे तो उन्होंने देसाई को वहीं पर शिक्षक के पद पर नियुक्त किया। कुछ समय पश्चात ही डॉ देसाई रीडर के पद पर पद्दोनत कर दिए गए। कालांतर में प्रोफेसर घुर्ये के सेवानिवृत होने पर समाजशास्त्र विभाग में विभागाध्यक्ष हो गए। घुर्ये के साथ साथ वे भी भारतीय समाजशास्त्रीय परिषद् (Indian Sociological Society) के संस्थापक सदस्यों में शामिल थे।

देसाई के पिता रमणलाल बसंतलाल देसाई एक साहित्यकार थे। अन्य साहित्यकारों की तरह उनके पिता समाज के निम्न वर्गों के लिए लिखते थे तथा 1930 के दशक में युवा आंदोलनों के प्रेरणास्रोत थे। पिता के विचारों का असर ए.आर.देसाई पर भी पड़ा। वे भी सूरत, बम्बई तथा बड़ौदा के युवा व विद्यार्थी आंदोलनों में सहभागिता करने लगे। इस सहभागिता ने उन्हें वामपंथी विचारों का समर्थक बना दिया। वे मार्क्स, एंजेल्स व लियोन ट्रोटस्की के विचारों से प्रभावित थे। उन्होंने मार्क्स के द्वंद्वात्मक व ऐतिहासिक भौतिकवादी उपागम को आधार बनाकर भारतीय समाज की संरचना की व्याख्या की। उन्होंने लिखा है कि परंपराओं की जड़े धर्म की बजाय आर्थिक परिस्थितियों में तलाशी जानी चाहिए। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के विकास क्रम को भी मार्क्सवादी उपागम के आधार पर समझाया है। उनके मतानुसार भारत की स्वतंत्रता के पीछे भारतीय राष्ट्रवादका उदय है। यह राष्ट्रवाद अपने आप पैदा नहीं हुआ वरन कुछ बड़ी आर्थिक परिवर्तनों का परिणाम है जो भारतीय समाज में घटित हुए। भारतीय राष्ट्रवाद की सम्पूर्ण विकास प्रक्रिया देसाई ने अपनी पुस्तक 'Social Background of Indian Nationalism' में समझाई है। यह उनकी डॉक्टोरल थीसिस है।

भारतीय राष्ट्रवाद की उत्पति के सम्बंध में ए आर देसाई के विचार

ए आर देसाई भारतीय राष्ट्रवाद की उत्पति को मार्क्सवादी दृष्टिकोण से समझाते हैं। उनका कहना है कि भारतीय राष्ट्रवाद का इतिहास भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास से निकटता से जुड़ा हुआ है। समय के साथ भारत की अर्थव्यवस्था एकीकृत हुई। इस एकीकृत अर्थव्यवस्थ का विकास पूर्व पूंजीवादी अर्थव्यव्स्था के नष्ट होने तथा उसके

स्थान पर आधुनिक पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के अस्तित्व में आने से हुआ। देसाई का मत है कि भारतीय गांव प्राचीन काल से ही आत्मनिर्भर थे। यहां का प्रत्येक परिवार अपने सरल यंत्रों से खेती व कुटीर उद्योग चलाते थे। परिवार अधिकांशतः गांव में ही वस्तु विनिमय के माध्यम से अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करते थे। इस प्रकार गांव एक आत्मनिर्भर इकाई थी। गांवो की यह आत्मनिर्भरता कुछ परिवर्तनों के साथ अंग्रेजों के आगमन तक बनी रहा। मुख्य व्यवसाय कृषि था। परिवार, जाति व ग्राम समिति (पंचायत) ग्राम की महत्त्वपूर्ण संस्थाएं थी। गांव ग्राम समिति द्वारा संचालित होता था। ग्राम के सारे संसाधन ग्राम समिति के अधीन थे। कृषि भूमि भी ग्राम समिति के अधीन थी। ग्राम समिति ही कृषि भूमि का कृषकों के बीच वितरण करती थी। कृषक परिवार प्राप्त भूमि को निरंतर अपने अधिकार में रख सकते थे। इस प्रकार का अधिकर वंशानुगत चलता रहता था।

देसाई के अनुसार अंग्रजों के आगमन से पूर्व भारत में कुछ शहर भी विकसित हो गए थे जो राजनितिक, धार्मिक एवम व्यवसायिक गतिविधियों के केंद्र थे। राजनीतिक शहर राज्यों की राजधानियां थी वहीं धार्मिक शहर तीर्थाटन के केंद्र थे। शहरों में भी कुटीर उद्योग चलते थे परंतु वे ग्रामीण कुटीर उद्योगों से इस मामले में भिन्न थे कि जहां ग्रामीण कुटीर उद्योग ग्रामीण आवश्यकता की वस्तुओं का निमार्ण करते थे वहीं शहरी कुटीर उद्योग प्रायः सेना के हथियार व उच्च व्यापारी वर्ग की विलासिता की वस्तुओं का उत्पादन करते थे। देसाई के अनुसार शहरी उद्योगों का बाजार सीमित था क्योंकि ग्रामीण क्षेत्र अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु शहरी उद्योगों पर आश्रित न होकर स्वाश्रित था। भारत में पूंजीवाद के विकास पर विचार व्यक्त करते हुए देसाई लिखते हैं कि अंग्रेजों के आगमन से पूर्व व्यापारी वर्ग आर्थिक तथा राजनैतिक रूप से सामंतों व कुलीनों पर निर्भर थे। जिसके कारण व्यापारी वर्ग कोई बड़ा परिर्वतन लाने में सफल नहीं हुए। देसाई का मत है कि शहरों तथा कृषि भूमि पर सामंतों की अत्यधिक पकड़ के कारण भारतीय बर्जुआ वर्ग भारत की परंपरागत अर्थव्यवस्था के स्थान पर पूंजीवादी अर्थव्यवस्था स्थापित नहीं कर पाए।

देसाई का मत है कि भारतीय राष्ट्रवाद एक आधुनिक प्रघटना है जो अंग्रजी शासन काल में अनेकों कारकों की क्रिया व प्रतिक्रिया के फलस्वरूप अस्तित्व में आया। देसाई राष्ट्रवाद की उत्पत्ति से पूर्व भारतीय समाज की उन स्थितियों का वर्णन करते हैं जिन्होंने भारतीय राष्ट्रवाद को पैदा नहीं होने दिया। देसाई के मतानुसार भारतीय समाज मूलतः ग्रामीण समाज रहा है। यहां के गांवों का बाहरी दुनिया से संपर्क नहीं था। आवागमन के साधन व उत्पादन के साधन कम विकसित थे। परिणामस्वरूप लोगों की आर्थिक दशाएं अनिश्चित थी। प्राकृतिक आपदाओं ने भी लोगों का जीवन मुश्किल बना रखा था। जिसके कारण लोगों में असुरक्षा की भावना गहराई तक बैठी थी। ऐसी स्थितियां में कोई भी समाज अंधविश्वासों व धार्मिक आडंबरों से बच नहीं सकता। भारतीय समाज के जाति व संयुक्त परिवार प्रणाली पर आधारित होने के कारण यहां व्यक्तिगत पहल तथा नवीन परिवर्तनकारी विचारों के अंकुरित होने की संभावना कम ही थी। इस प्रकार भारतीय ग्रामीण समाज दीर्घकाल तक अंधविश्वासी, संकुचित व रूढ़िवादी जीवन जीता रहा तथा उसमें किसी भी प्रकार की राष्ट्रीय चेतना का बीज पनप नहीं सका। देसाई के मतानुसार मार्क्सवादी भाषा में राष्ट्रवाद की उत्पत्ति के लिए जिन भौतिक स्थितियों की आवश्यकता थी वे यहां उपलब्ध नहीं थी। देसाई के अनुसार राष्ट्रवाद की उत्पत्ति तभी हो सकती है जब उत्पादन शक्तियां विकास के उच्च

स्तर पर पहुंच जाए, श्रम विभाजन सार्वभौमिक हो तथा हर स्तर पर आर्थिक विनिमय संभव हो। इस प्रकार के विकसित आर्थिक जीवन वाले समाज में परिवहन व संचार के साधन भी विकसित हो जाते हैं जो अर्थव्यवस्था को और अधिक मजबूत व एकीकृत करते हैं। इस एकीकरण से लोगों के बीच लेनदेन बढ़ता है जो अंततः बौद्धिक विमर्श को बढ़ावा देता है।

देसाई का मत है कि भारत के आत्मनिर्भर गांवों में लोगों के बीच सामान्य आर्थिक जीवन का अस्तित्व नहीं था जिसके कारण उनमें सामान्य आर्थिक अस्तित्व की चेतना भी विकसित नहीं हो पाई। जिसके कार सामान्य राजनीतिक चेतना भी विकसित नहीं हो पाई थी। इसकी बड़ी वजह यह थी कि गांव अपने आप में स्वतंत्र थे। राजा या किसी प्रशासनिक प्रणाली का यहां प्रभाव नहीं था। ग्रामीण समाज परंपरागत आधारों पर संचालित हो रहा था तथा यहां राजनीतिक आर्थिक एकता (जो राष्ट्रवाद का आधार होती है) के स्थान पर धार्मिक विचारधारात्मक एकता की चेतना थी। देसाई के अनुसार भारतीय समाज की सामाजिक भौतिक स्थितियां ऐसी थी जिससे दुनिया को देखने का एक रहस्यात्मक दृष्टिकोण ही विकसित हो सकता था। इसी कारण सृजन के सभी क्षेत्रों में यह रहस्यवाद दिखाई देता था। हिन्दू तथा मुस्लिम दोनों ही संस्कृतियों में धर्मांधता के कारण स्थापत्य में धर्म व आध्यात्म का पर्याप्त प्रभाव दिखाई देता था। देसाई ने लिखा है उपरोक्त पक्षों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अंग्रजों के आगमन से पूर्व भारत में एक राष्ट्रीय संस्कृति की उत्पत्ति के लिए आवश्यक वस्तुनिष्ठ कारक मौजूद नहीं थे। देसाई का मत है कि एक राष्ट्रीय संस्कृति के निमार्ण के लिए आवश्यक है कि एक समुदाय में उत्पादन शक्तियों व श्रम विभाजन का विकास हो, समुदाय के लोग आपस में विनिमय संबंधो में बंधे, तेज परिवहन साधनों का विकास हो, आर्थिक विनिमय की जरूरतों के चलते एक सामान्य भाषा का विकास हो तथा कालांतर में यह समुदाय सामाजिक व राजनीतिक रूप से भी एकीकृत हो। अर्थात् राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया आर्थिक विकास की चेतना से सहसंबद्ध है। आर्थिक विकास की चेतना एक स्वतंत्र राज्य की मांग को बढ़ा देती है। यह मांग समय के साथ गीत—संगीत तथा साहित्य में भी प्रकट होने लगती है। देसाई का मत है कि अंग्रेजों के आगमन के पश्चात विकसित पूंजीवादी अर्थव्यवस्था ने भारत के असंबद्ध समुदाय को आर्थिक व सामाजिक रूप से एकीकृत कर भारतीय राष्ट्र को जन्म दिया। देसाई के अनुसार भारत के इस पूंजीवादी समाज में जमींदार व सामंत जैसे प्रतिक्रियावादी तत्व भी शामिल थे। साथ ही किसान, सर्वहारा, पेटी बुर्जुआ जैसे पक्ष नवीन पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के कारण भारतीय समाज में अस्तित्व में आए। इन सभी वर्गों ने प्रतिक्रियावादी सामंतों के साथ साथ साम्राज्यवादी शासन के विरोधी चरित्र को महसूस किया। देसाई के अनुसार इन सभी वर्गों के हित संदर्भों के अनुसार आपस में विरोधाभाषी भी थे परन्तु फिर भी समूह चेतना के अंश के अनुरूप राष्ट्रवादी संस्कृति का विकास होता गया। उदहारण के लिए श्रमिक वर्ग समाजवाद के पक्षधर थे परन्तु चरित्र से राष्ट्रवादी थे। इस समाज में राष्ट्रीय बुर्जुआ, राष्ट्रीय सर्वहारा, राष्ट्रीय पेटी बुर्जुआ व किसान वर्ग ने भी राष्ट्रीय संस्कृति के निर्माण में भाग लिया। इस राष्ट्रीय संस्कृति में बंगाली, गुजराती, महाराष्ट्रीय, कर्नाटकी तथा अन्य क्षेत्रीय संस्कृतियां भी सम्मिलित थी। इस प्रकार विभिन्न सामाजिक वर्गों तथा क्षेत्रीय संस्कृतियों से एक राष्ट्रीय संस्कृति का निर्माण हुआ जिसने भारतीय राष्ट्र के स्वतंत्र विकास की आवश्यकता को अभिव्यक्त किया। प्रेस ने राष्ट्रवादी विचारों को आमजन तक पहुंचा कर राष्ट्रवादी संस्कृति के निर्माण को गति प्रदान की। दूसरी ओर भारत में अपना व्यापार

बढ़ाने तथा कारखानों में काम कराने के लिए अंग्रेजों को क्लर्कों, मैनेजरों की आवश्यकता थी जिसे पूरी करने के लिए उन्होंने आधुनिक शिक्षा को प्रारंभ किया। आधुनिक शिक्षा ने भारतीय लोगों को नवीन सामाजिक व वैज्ञानिकों ज्ञान से परिचित कराया। इस शिक्षा ने लोगों को आधुनिक संदर्भों में तार्किक बनाया तथा राष्ट्रवादी विचारों को निर्मित करने में मदद की। विकास की प्रक्रिया में भारतीय राष्ट्रवाद विकसित होकर चरम पर पहुंचा और भारत एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में अस्तित्व में आया।

***सहायक आचार्य**
समाजशास्त्र विभाग
राजकीय कला महाविद्यालय,
सीकर (राज.)

संदर्भ ग्रंथ

(1) भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि, ए आर देसाई, सेज पब्लिकेशंस,2018

(2) इंडियन सोशियोलॉजिकल थॉट, बी के नागला, रावत पब्लिकेशंस, 2015